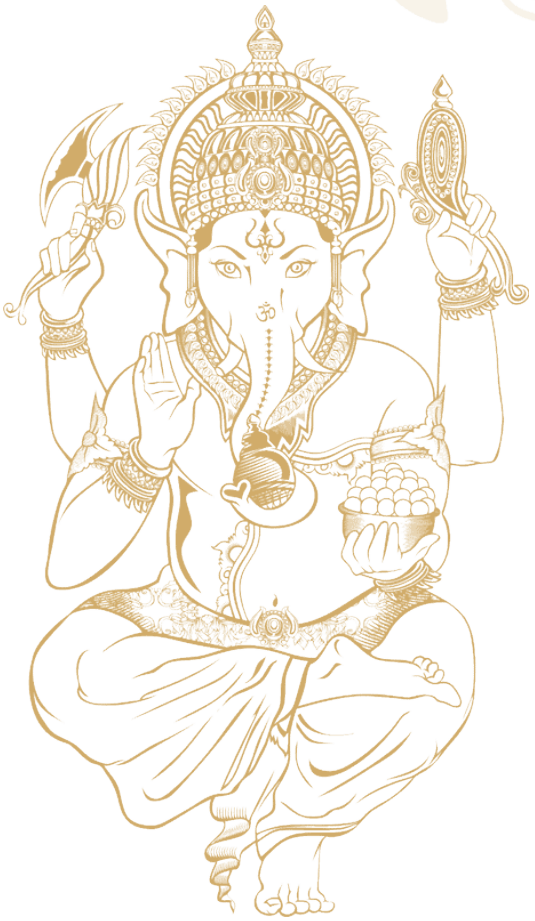

Trivikram Upadhye

04 Jan 1983

12:22 AM

Goa

Model: Web-KundliPhal **Order No: 119773301**

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**3-04/01/1983**
दिवस	सोम–मंगळवार
जन्म समय	**00:22:00 कला**
इष्ट	43:20:30 घटी
स्थान	**Goa**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	15:31:00 उत्तर
रेखांश	73:56:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:34:16 कला
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
स्थानिक वेल	23:47:44 कला
वेलान्तर	-00:04:14 कला
साम्पातिक वेल	06:39:03 कला
सूर्योदय	07:01:48 कला
सूर्यास्त	18:15:20 कला
दिनमान	11:13:33 कला
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्याचे अंश	19:12:52 धनु
लग्नाचे अंश	15:52:07 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	कन्या – बुध
राशि–स्वामी	**सिंह – रवि**
नक्षत्र–चरण	**पू.फाल्गुनी – 2**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	आयुष्मान
करण	तैतिल
गण	मनुष्य
योनि	उंदीर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	टा–तरुण
पाया(राशि–नक्षत्र)	लौह – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

पंचांग

आजोबांचें नांव _____:
बडीलांचे नांव _____:
आईचें नांव _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	माह	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1904	पौष	14
पंजाबी	संवत : 2039	पौष	21
बंगाली	सन् : 1389	पौष	19
तमिल	संवत : 2039	मारगाली	20
केरल	कोल्लम : 1158	धनु	20
नेपाली	संवत : 2039	पौष	20
चैत्रादी	संवत : 2039	पौष	कृष्ण 6
कार्तिकादी	संवत : 2039	मार्गशीर्ष	कृष्ण 6

पंचांग

सूर्योदय समयी तिथि _____: 5
तिथि समाप्ति वेल _____: 24:43:06
जन्म तिथि _____: 5
सूर्योदय समयी नक्षत्र _____: मघा
नक्षत्र समाप्ति वेल _____: 14:49:42 कला
जन्म योग _____: पू.फाल्गुनी
सूर्योदय समयी योग _____: आयुष्मान
योग समाप्ति वेल _____: 27:08:57 कला
जन्म योग _____: आयुष्मान
सूर्योदय समयी करण _____: कौलव
करण समाप्ति वेल _____: 13:53:20 कला
जन्म करण _____: तैतिल
भयात _____: 23:50:45
भभोग _____: 56:21:54
भोग्य दशा वेल _____: शुक्र 11 वर्ष 5 मा 18 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिवस _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मेष
लग्न _____: मीन
रवि _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगळ _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

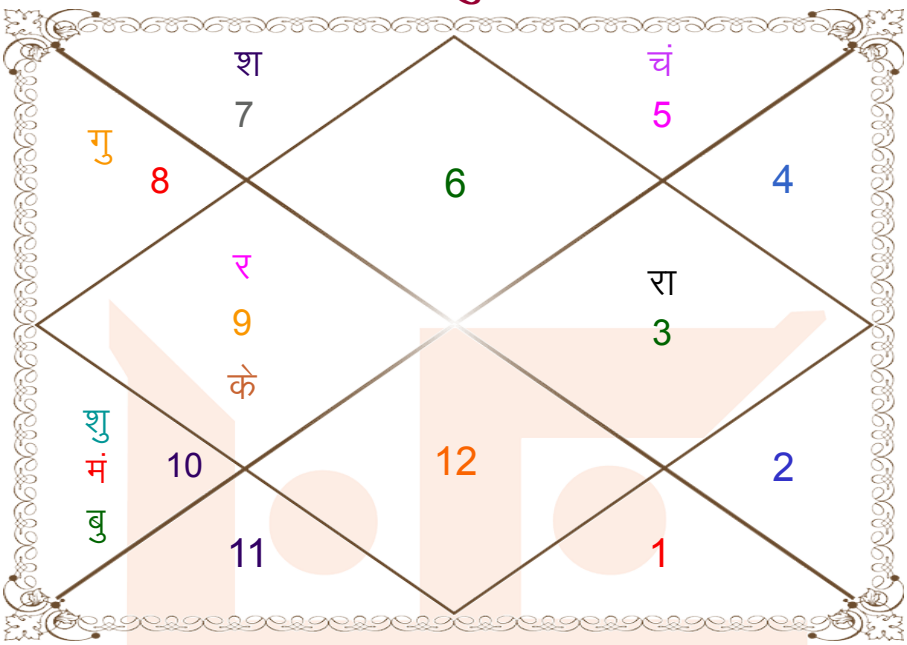

चन्द्र कुंडली

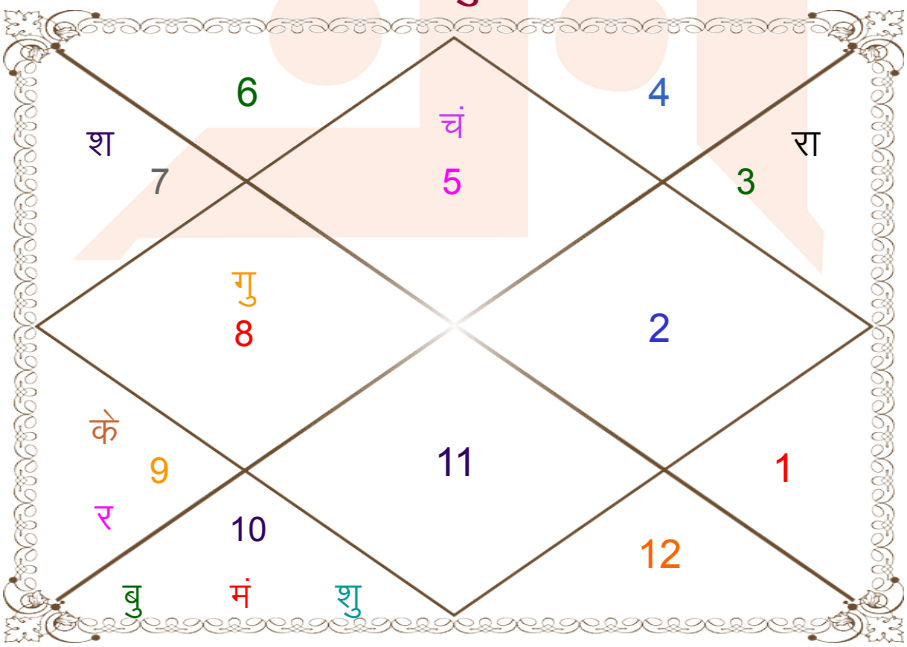

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

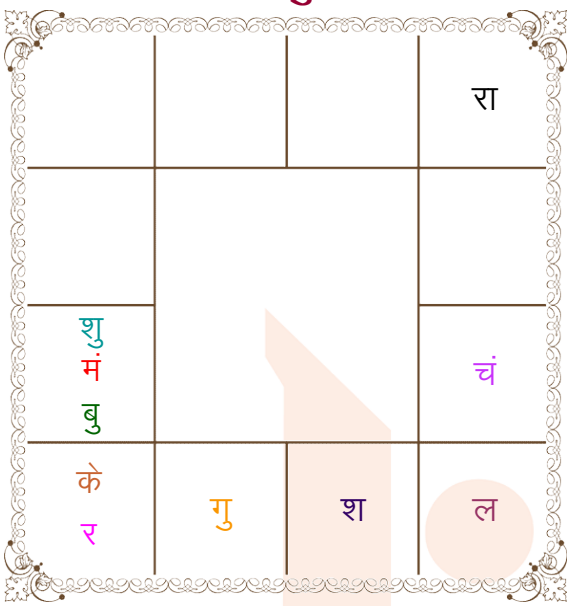

लग्न कुंडली

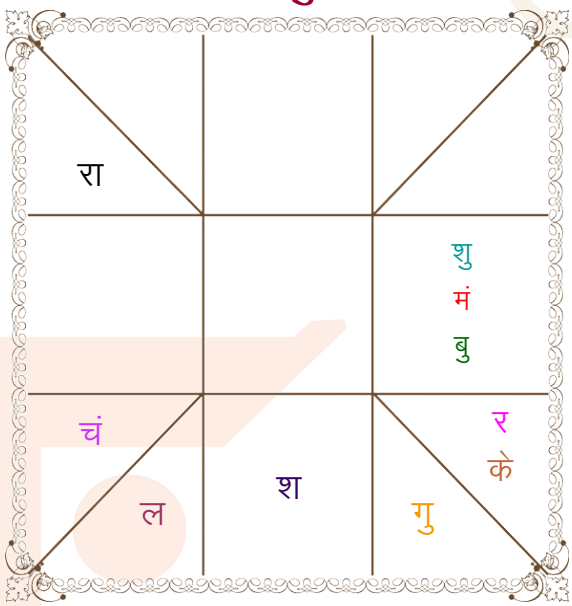

विंशोत्तरी
शुक्र 11वर्ष 5मा 18दि

शुक्र

04/01/1983

23/06/2094

शुक्र	23/06/1994
रवि	23/06/2000
चन्द्र	23/06/2010
मंगळ	23/06/2017
राहु	24/06/2035
गुरु	24/06/2051
शनि	23/06/2070
बुध	24/06/2087
केतु	23/06/2094

योगिनी
उल्का 3वर्ष 5मा 8दि

सिद्धा

13/06/2022

13/06/2029

सिद्धा	23/10/2023
संकटा	13/05/2025
मंगळा	24/07/2025
पिंगला	13/12/2025
धान्या	14/07/2026
भ्रामरी	24/04/2027
भद्रिका	13/04/2028
उल्का	13/06/2029

ग्रह स्पष्ट तथा त्यांची स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	15:52:07	350:03:42	हस्त	2	13	बुध	चंद्र	शनि	———
सूर्य			धनु	19:12:52	01:01:09	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	राहु	मित्र राशि
चंद्र			सिंह	19:01:16	14:13:32	पू.फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	मित्र राशि
मंगळ			मक	25:34:23	00:47:06	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगळ	राहु	उच्च राशि
बुध			मक	07:58:31	00:33:57	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	सम राशि
गुरु			वृश्चि	08:06:01	00:11:32	अनुराधा	2	17	मंगळ	शनि	केतु	मित्र राशि
शुक्र			मक	03:55:27	01:15:14	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	मित्र राशि
शनि			तुला	09:28:30	00:03:56	स्वाति	1	15	शुक्र	राहु	गुरु	उच्च राशि
राहु	व		मिथु	10:36:54	00:01:14	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	उच्च राशि
केतु	व		धनु	10:36:54	00:01:14	मूल	4	19	गुरु	केतु	शनि	उच्च राशि
हर्ष			वृश्चि	13:28:00	00:03:11	अनुराधा	4	17	मंगळ	शनि	राहु	———
नेप			धनु	03:44:03	00:02:12	मूल	2	19	गुरु	केतु	चंद्र	———
प्लूटो			तुला	05:40:13	00:01:01	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगळ	चंद्र	———
दशम भाव			मिथु	15:21:05	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	शुक्र	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
लाहिरी अयनांश : 23:36:55

लग्न–चलित

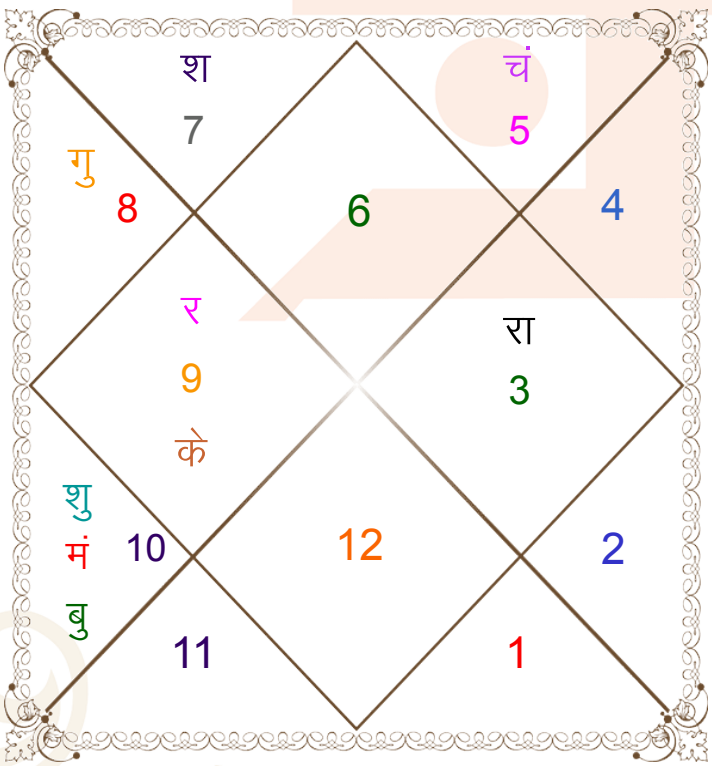

चन्द्र कुंडली

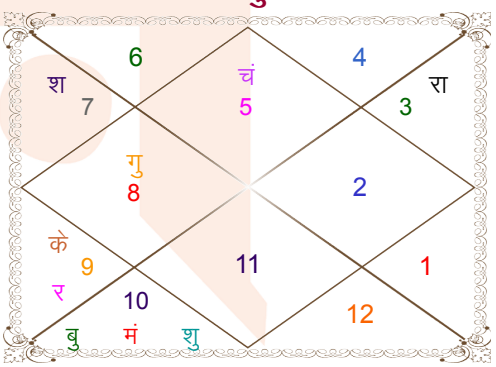

नवमांश कुंडली

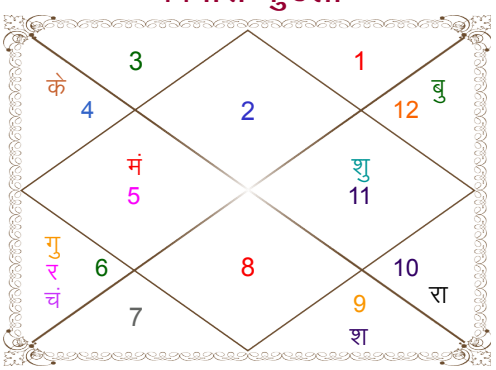

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कन्या	00:46:57	कन्या	15:52:07
2	तुला	00:46:57	तुला	15:41:47
3	वृश्चिक	00:36:36	वृश्चिक	15:31:26
4	धनु	00:26:16	धनु	15:21:05
5	मकर	00:26:16	मकर	15:31:26
6	कुम्भ	00:36:36	कुम्भ	15:41:47
7	मीन	00:46:57	मीन	15:52:07
8	मेष	00:46:57	मेष	15:41:47
9	वृषभ	00:36:36	वृषभ	15:31:26
10	मिथुन	00:26:16	मिथुन	15:21:05
11	कर्क	00:26:16	कर्क	15:31:26
12	सिंह	00:36:36	सिंह	15:41:47

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	15:52:07
2	तुला	15:46:19
3	वृश्चिक	15:41:49
4	धनु	15:21:05
5	मकर	15:26:04
6	कुम्भ	16:04:04
7	मीन	15:52:07
8	मेष	15:46:19
9	वृषभ	15:41:49
10	मिथुन	15:21:05
11	कर्क	15:26:04
12	सिंह	16:04:04

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली

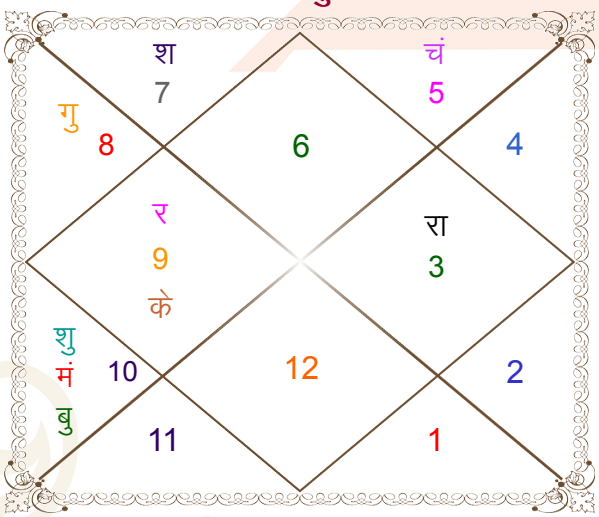

भाव कुंडली

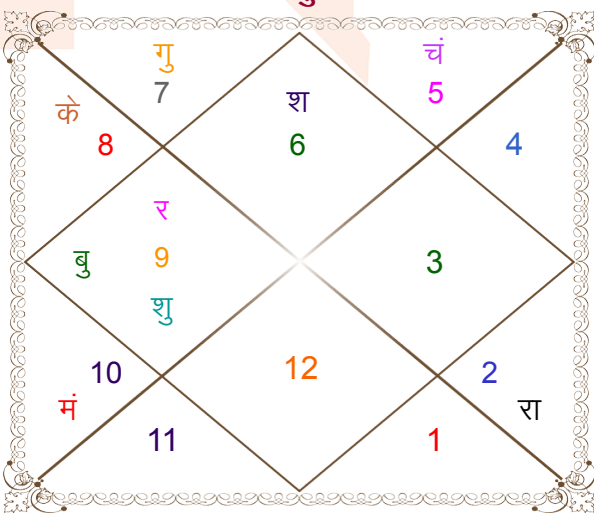

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	——— कारक ———		——— अवस्था ———				
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	अमात्य	पितृ	वृद्ध	मुदित	निद्रा	5.13	43 %
चंद्र	भ्रातृ	मातृ	वृद्ध	मुदित	निद्रा	3.70	23 %
मंगळ	आत्मा	भ्रातृ	बाल	दीप्त	निद्रा	14.80	44 %
बुध	ज्ञाति	ज्ञाति	वृद्ध	शक्त	निद्रा	2.23	42 %
गुरु	पुत्र	धन	वृद्ध	मुदित	नेत्रपाणि	2.95	40 %
शुक्र	कलत्र	कलत्र	मृत	मुदित	निद्रा	5.74	62 %
शनि	मातृ	आयुष्य	कुमार	दीप्त	नेत्रपाणि	14.12	49 %
राहु	———	ज्ञान	कुमार	दीप्त	निद्रा	0.00	31 %
केतु	———	मोक्ष	कुमार	दीप्त	निद्रा	0.00	31 %
एकुण						**48.67**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू.फाल्गुनी	उ.फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भाद्रपद	उ.भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली

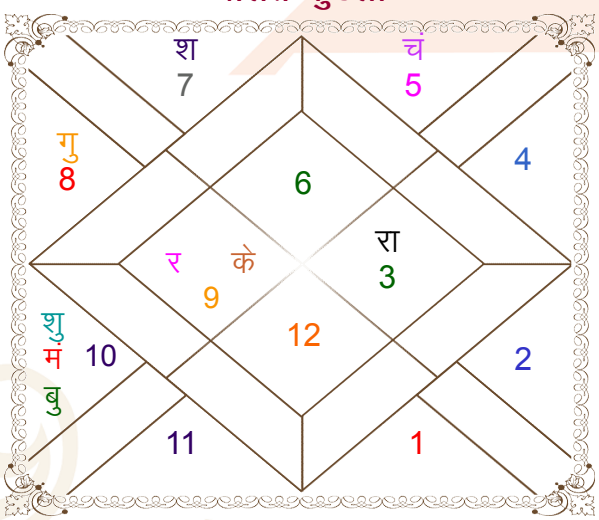

लग्न–चलित

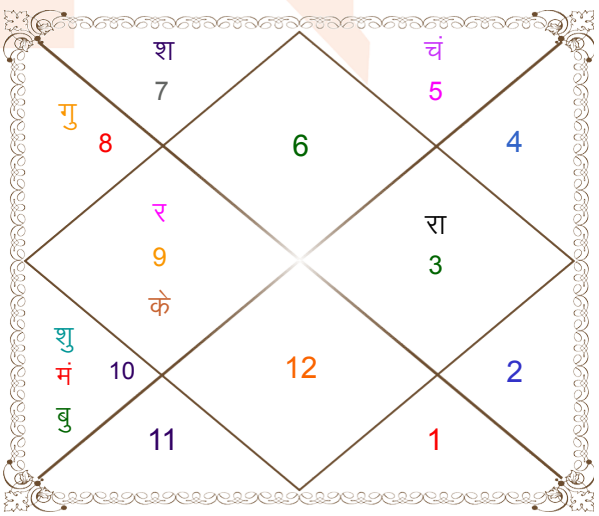

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा वेल : शुक्र 11 वर्ष 5 महिना 18 दिवस

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगळ 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
04/01/1983		23/06/1994		23/06/2000		23/06/2010		23/06/2017	
23/06/1994		23/06/2000		23/06/2010		23/06/2017		24/06/2035	
	00/00/0000	सूर्य	11/10/1994	चंद्र	23/04/2001	मंगळ	20/11/2010	राहु	05/03/2020
	00/00/0000	चंद्र	12/04/1995	मंगळ	22/11/2001	राहु	08/12/2011	गुरु	30/07/2022
	00/00/0000	मंगळ	17/08/1995	राहु	24/05/2003	गुरु	13/11/2012	शनि	05/06/2025
	04/01/1983	राहु	11/07/1996	गुरु	22/09/2004	शनि	23/12/2013	बुध	23/12/2027
राहु	23/08/1984	गुरु	29/04/1997	शनि	24/04/2006	बुध	20/12/2014	केतु	10/01/2029
गुरु	24/04/1987	शनि	11/04/1998	बुध	23/09/2007	केतु	18/05/2015	शुक्र	11/01/2032
शनि	23/06/1990	बुध	16/02/1999	केतु	23/04/2008	शुक्र	17/07/2016	सूर्य	04/12/2032
बुध	23/04/1993	केतु	24/06/1999	शुक्र	23/12/2009	सूर्य	22/11/2016	चंद्र	05/06/2034
केतु	23/06/1994	शुक्र	23/06/2000	सूर्य	23/06/2010	चंद्र	23/06/2017	मंगळ	24/06/2035

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
24/06/2035		24/06/2051		23/06/2070		24/06/2087		23/06/2094	
24/06/2051		23/06/2070		24/06/2087		23/06/2094		00/00/0000	
गुरु	11/08/2037	शनि	26/06/2054	बुध	19/11/2072	केतु	20/11/2087	शुक्र	23/10/2097
शनि	22/02/2040	बुध	06/03/2057	केतु	16/11/2073	शुक्र	19/01/2089	सूर्य	23/10/2098
बुध	30/05/2042	केतु	14/04/2058	शुक्र	16/09/2076	सूर्य	27/05/2089	चंद्र	24/06/2100
केतु	06/05/2043	शुक्र	14/06/2061	सूर्य	24/07/2077	चंद्र	26/12/2089	मंगळ	24/08/2101
शुक्र	04/01/2046	सूर्य	27/05/2062	चंद्र	23/12/2078	मंगळ	24/05/2090	राहु	05/01/2103
सूर्य	23/10/2046	चंद्र	26/12/2063	मंगळ	20/12/2079	राहु	11/06/2091		00/00/0000
चंद्र	22/02/2048	मंगळ	03/02/2065	राहु	09/07/2082	गुरु	17/05/2092		00/00/0000
मंगळ	28/01/2049	राहु	11/12/2067	गुरु	13/10/2084	शनि	26/06/2093		00/00/0000
राहु	24/06/2051	गुरु	23/06/2070	शनि	24/06/2087	बुध	23/06/2094		00/00/0000

- वरील दशा चन्द्रमा चे अंशा चे आधार वर्ती दीलेली आहे. भयात भभोग चे आधार अनुसार दशाच्या भोग्यकाल शुक्र 11 वर्ष 6 मा 14 दि होता आहेत.
- वरील दिनांक दशा समाप्ति चा समय दाखवते. विंशोत्तरी दशा पूर्ण 120 वर्षाची बिना आयुनिर्णय दिलेली आहे.

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - बुध		राहु - केतु		राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र	
05/06/2025		23/12/2027		10/01/2029		11/01/2032		04/12/2032	
23/12/2027		10/01/2029		11/01/2032		04/12/2032		05/06/2034	
बुध	15/10/2025	केतु	15/01/2028	शुक्र	11/07/2029	सूर्य	27/01/2032	चंद्र	19/01/2033
केतु	08/12/2025	शुक्र	19/03/2028	सूर्य	04/09/2029	चंद्र	23/02/2032	मंगळ	20/02/2033
शुक्र	12/05/2026	सूर्य	07/04/2028	चंद्र	04/12/2029	मंगळ	14/03/2032	राहु	13/05/2033
सूर्य	28/06/2026	चंद्र	09/05/2028	मंगळ	06/02/2030	राहु	02/05/2032	गुरु	25/07/2033
चंद्र	14/09/2026	मंगळ	31/05/2028	राहु	21/07/2030	गुरु	15/06/2032	शनि	20/10/2033
मंगळ	07/11/2026	राहु	28/07/2028	गुरु	14/12/2030	शनि	06/08/2032	बुध	05/01/2034
राहु	27/03/2027	गुरु	17/09/2028	शनि	05/06/2031	बुध	21/09/2032	केतु	06/02/2034
गुरु	29/07/2027	शनि	16/11/2028	बुध	08/11/2031	केतु	10/10/2032	शुक्र	09/05/2034
शनि	23/12/2027	बुध	10/01/2029	केतु	11/01/2032	शुक्र	04/12/2032	सूर्य	05/06/2034

राहु - मंगळ		गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु	
05/06/2034		24/06/2035		11/08/2037		22/02/2040		30/05/2042	
24/06/2035		11/08/2037		22/02/2040		30/05/2042		06/05/2043	
मंगळ	27/06/2034	गुरु	06/10/2035	शनि	04/01/2038	बुध	18/06/2040	केतु	19/06/2042
राहु	24/08/2034	शनि	06/02/2036	बुध	15/05/2038	केतु	06/08/2040	शुक्र	15/08/2042
गुरु	14/10/2034	बुध	26/05/2036	केतु	08/07/2038	शुक्र	22/12/2040	सूर्य	01/09/2042
शनि	14/12/2034	केतु	11/07/2036	शुक्र	10/12/2038	सूर्य	01/02/2041	चंद्र	29/09/2042
बुध	06/02/2035	शुक्र	18/11/2036	सूर्य	25/01/2039	चंद्र	11/04/2041	मंगळ	19/10/2042
केतु	01/03/2035	सूर्य	27/12/2036	चंद्र	12/04/2039	मंगळ	29/05/2041	राहु	09/12/2042
शुक्र	03/05/2035	चंद्र	01/03/2037	मंगळ	05/06/2039	राहु	01/10/2041	गुरु	24/01/2043
सूर्य	23/05/2035	मंगळ	16/04/2037	राहु	22/10/2039	गुरु	19/01/2042	शनि	19/03/2043
चंद्र	24/06/2035	राहु	11/08/2037	गुरु	22/02/2040	शनि	30/05/2042	बुध	06/05/2043

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगळ		गुरु - राहु	
06/05/2043		04/01/2046		23/10/2046		22/02/2048		28/01/2049	
04/01/2046		23/10/2046		22/02/2048		28/01/2049		24/06/2051	
शुक्र	15/10/2043	सूर्य	19/01/2046	चंद्र	03/12/2046	मंगळ	13/03/2048	राहु	09/06/2049
सूर्य	03/12/2043	चंद्र	12/02/2046	मंगळ	31/12/2046	राहु	03/05/2048	गुरु	03/10/2049
चंद्र	22/02/2044	मंगळ	01/03/2046	राहु	14/03/2047	गुरु	18/06/2048	शनि	19/02/2050
मंगळ	19/04/2044	राहु	14/04/2046	गुरु	18/05/2047	शनि	11/08/2048	बुध	23/06/2050
राहु	12/09/2044	गुरु	23/05/2046	शनि	03/08/2047	बुध	28/09/2048	केतु	14/08/2050
गुरु	20/01/2045	शनि	08/07/2046	बुध	11/10/2047	केतु	18/10/2048	शुक्र	07/01/2051
शनि	23/06/2045	बुध	18/08/2046	केतु	09/11/2047	शुक्र	14/12/2048	सूर्य	19/02/2051
बुध	08/11/2045	केतु	04/09/2046	शुक्र	29/01/2048	सूर्य	31/12/2048	चंद्र	03/05/2051
केतु	04/01/2046	शुक्र	23/10/2046	सूर्य	22/02/2048	चंद्र	28/01/2049	मंगळ	24/06/2051

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य	
24/06/2051		26/06/2054		06/03/2057		14/04/2058		14/06/2061	
26/06/2054		06/03/2057		14/04/2058		14/06/2061		27/05/2062	
शनि	15/12/2051	बुध	13/11/2054	केतु	29/03/2057	शुक्र	24/10/2058	सूर्य	01/07/2061
बुध	18/05/2052	केतु	09/01/2055	शुक्र	05/06/2057	सूर्य	21/12/2058	चंद्र	30/07/2061
केतु	21/07/2052	शुक्र	22/06/2055	सूर्य	25/06/2057	चंद्र	27/03/2059	मंगळ	20/08/2061
शुक्र	20/01/2053	सूर्य	10/08/2055	चंद्र	29/07/2057	मंगळ	03/06/2059	राहु	11/10/2061
सूर्य	16/03/2053	चंद्र	31/10/2055	मंगळ	21/08/2057	राहु	23/11/2059	गुरु	26/11/2061
चंद्र	16/06/2053	मंगळ	27/12/2055	राहु	21/10/2057	गुरु	26/04/2060	शनि	20/01/2062
मंगळ	19/08/2053	राहु	23/05/2056	गुरु	14/12/2057	शनि	26/10/2060	बुध	10/03/2062
राहु	31/01/2054	गुरु	01/10/2056	शनि	16/02/2058	बुध	08/04/2061	केतु	30/03/2062
गुरु	26/06/2054	शनि	06/03/2057	बुध	14/04/2058	केतु	14/06/2061	शुक्र	27/05/2062

शनि - चंद्र		शनि - मंगळ		शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध	
27/05/2062		26/12/2063		03/02/2065		11/12/2067		23/06/2070	
26/12/2063		03/02/2065		11/12/2067		23/06/2070		19/11/2072	
चंद्र	14/07/2062	मंगळ	19/01/2064	राहु	09/07/2065	गुरु	12/04/2068	बुध	26/10/2070
मंगळ	17/08/2062	राहु	20/03/2064	गुरु	25/11/2065	शनि	06/09/2068	केतु	16/12/2070
राहु	12/11/2062	गुरु	13/05/2064	शनि	09/05/2066	बुध	15/01/2069	शुक्र	12/05/2071
गुरु	28/01/2063	शनि	16/07/2064	बुध	03/10/2066	केतु	10/03/2069	सूर्य	25/06/2071
शनि	29/04/2063	बुध	11/09/2064	केतु	03/12/2066	शुक्र	11/08/2069	चंद्र	06/09/2071
बुध	20/07/2063	केतु	05/10/2064	शुक्र	26/05/2067	सूर्य	26/09/2069	मंगळ	28/10/2071
केतु	23/08/2063	शुक्र	11/12/2064	सूर्य	17/07/2067	चंद्र	13/12/2069	राहु	07/03/2072
शुक्र	27/11/2063	सूर्य	31/12/2064	चंद्र	11/10/2067	मंगळ	05/02/2070	गुरु	03/07/2072
सूर्य	26/12/2063	चंद्र	03/02/2065	मंगळ	11/12/2067	राहु	23/06/2070	शनि	19/11/2072

बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगळ	
19/11/2072		16/11/2073		16/09/2076		24/07/2077		23/12/2078	
16/11/2073		16/09/2076		24/07/2077		23/12/2078		20/12/2079	
केतु	10/12/2072	शुक्र	08/05/2074	सूर्य	02/10/2076	चंद्र	05/09/2077	मंगळ	13/01/2079
शुक्र	09/02/2073	सूर्य	28/06/2074	चंद्र	27/10/2076	मंगळ	05/10/2077	राहु	08/03/2079
सूर्य	27/02/2073	चंद्र	23/09/2074	मंगळ	15/11/2076	राहु	21/12/2077	गुरु	26/04/2079
चंद्र	29/03/2073	मंगळ	22/11/2074	राहु	31/12/2076	गुरु	28/02/2078	शनि	22/06/2079
मंगळ	19/04/2073	राहु	26/04/2075	गुरु	11/02/2077	शनि	21/05/2078	बुध	12/08/2079
राहु	12/06/2073	गुरु	11/09/2075	शनि	01/04/2077	बुध	03/08/2078	केतु	03/09/2079
गुरु	31/07/2073	शनि	22/02/2076	बुध	15/05/2077	केतु	02/09/2078	शुक्र	02/11/2079
शनि	26/09/2073	बुध	18/07/2076	केतु	02/06/2077	शुक्र	27/11/2078	सूर्य	20/11/2079
बुध	16/11/2073	केतु	16/09/2076	शुक्र	24/07/2077	सूर्य	23/12/2078	चंद्र	20/12/2079

शुभाशुभ ज्ञान

शुभाशुभ ज्ञान करण्याची आपणास आपल्या मित्र व शत्रुविषयी बोध करते. मूलांक, भाग्यांक व, मित्रांकद्वारे मैत्री व भागीदारी करण्यात फायदा होईल, त्याच प्रमाणे शुभ दिवस व शुभवर्ष प्रगतिकारक ठरेल, शुभग्रहांची, दशा सुद्धा लाभकारक धरते, मित्रलग्न व मित्रराशि लाभदायक अस्ते.

शुभरत्न व धातु तसेच रंग धारण केल्याने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभते, भाग्य रत्न धारण केल्याने भाग्यवृद्धि होते. शुभ वेली कोणत्याही कार्यांचा आरम्भ केल्याने अपेक्षित यश मिलते. इष्टदेव–देवतांचे ध्यान व जप केल्याने मानसिक शक्ति वाढते व यश लवकर मिलते. शुभ पदार्थ, अन्न, द्रव्य इत्यादि चे दान केल्याने ही शुभफल मिलते. व्यापार–उधोग शुभ दिशेला केल्यास त्यात भरभराट होउन अपेक्षत लाभ होतो. शुभ–अशुभ ज्ञानाचा प्रयोग दैनंदिन जीवनात शुभफलदायी ठरतो.

मूलांक	4
भाग्यांक	8
मित्र अंक	1, 4, 6, 8
शत्रु अंक	3, 7,
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिवस	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	धनु, वृषभ, कर्क
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, ओपल
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सकाली के बाद
दान पदार्थ	हत्ती दाँत, काफुर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	तूप

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं. वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं. यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है. ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो. यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो. मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है. बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है. चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है. उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है. साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है. विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है. जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए. जिन्हें 50–75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए. जो रत्न केवल 25–50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए. अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	100%	सन्तति सुख, भाग्योदय, धन
गोमेद	राहु	81%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
नीलम	शनि	75%	धन, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	64%	सुख, पराक्रम
पुष्कराज	गुरु	47%	पराक्रम हानि, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
मोती	चंद्र	41%	व्यय, हानि
पोवले	मंगळ	31%	सन्तति कष्ट, दुर्घटना, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	16%	ग्रह कलेश, व्यय

रत्न की शुभता

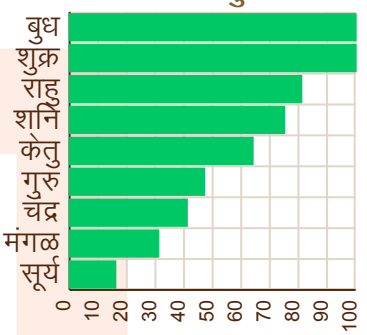

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	पोवले	पन्ना	पुष्कराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	23/06/1994	0%	16%	31%	100%	47%	100%	81%	88%	70%
सूर्य	23/06/2000	41%	52%	44%	100%	55%	89%	62%	69%	52%
चंद्र	23/06/2010	28%	58%	31%	100%	47%	100%	75%	69%	52%
मंगळ	23/06/2017	28%	52%	53%	100%	55%	100%	75%	69%	70%
राहु	24/06/2035	0%	16%	6%	100%	47%	100%	81%	94%	52%
गुरु	24/06/2051	28%	52%	44%	100%	61%	89%	75%	81%	64%
शनि	23/06/2070	0%	16%	6%	100%	47%	100%	88%	88%	52%
बुध	24/06/2087	28%	16%	31%	100%	47%	100%	75%	81%	64%
केतु	23/06/2094	0%	16%	44%	100%	47%	100%	62%	69%	77%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह–नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पन्ना, हीरा, गोमेद व नीलम रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

गोमेद व नीलम रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया शुभ रत्न है। इसकी शुभता स्व-दशा या मित्र दशाओं में बढ़ जाती है। अतः इस रत्न को इसकी शत्रु दशा में न पहनकर मित्रादि की दशा में पहनकर इसके शुभ फलों का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसकी शत्रु दशा में आप रुद्राक्ष पहनकर या दान, मंत्र जाप आदि से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

पुखराज, मोती व मूंगा रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

माणिक्य पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध पंचम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको प्रसन्नचित्त, कुशाग्रबुद्धि और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। रत्न की शुभता से वाद विवाद में कुशल, तर्ककुशल और मधुरभाषी बनेंगे। यह रत्न आपको सदाचारी, धैर्यशील, चरित्रवान और संतोषी बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आप अपनी बुद्धि से धनार्जन करेंगे। यह रत्न आपको अपनी व्यवसायिक बुद्धि और विद्या के कारण एक सुखद जीवन व्यतीत करने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव आपको लोभ भावना से बचायेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते है। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ऊँ बुं बुधाय नमः का ९ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न 3 रत्ती का कम से कम, अन्यथा 6 रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते है। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र पंचम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको कविताओं, ललितकलाओं और लेखन में गहरी रुचि देगा। संगत, कला और सौंदर्य सम्पन्न और सद्गुणी बनाएगा। आप आस्तिक और उदार व्यक्ति बनेंगे। हीरे रत्न प्रभाव से आप विद्वान, प्रतिभाशाली और अच्छे वक्ता सिद्ध होंगे। इस रत्न की शुभता से आप राजनीतिज्ञ मंत्री या न्यायाधीस भी हो सकते हैं। साथ ही यह रत्न वाहनों का सुख, उत्तम व विश्वसनीय मित्र देगा। संतान सुख के पक्ष से भी यह रत्न शुभदायक रहेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए है। शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते है। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ऊँ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा 1 रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। अतः आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। गोमेद रत्न आपको बलवान और निडर बनाएगा। गोमेद की शुभता से आप बुद्धिमान, परोपकारी, सफल, सम्मानित, कीर्तिमान और श्रेष्ठ बनेंगे। रत्न शुभता से आप कार्यक्षेत्र में अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। रत्न शुभता आपको व्यापारिक निपुणता और यात्राओं से लाभ देगी। गोमेद रत्न की अनुकूलता आपको अदालती कामों में विजय देगी। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपके कामों में नियमितता आयेगी।

राहु मिथुन राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध पंचम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं

जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आपको शनि का रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपको धनी, कुटुंब तथा लाभवान बनायेगा। आपके पास धनागमन का प्रवाह बना रहेगा। नीलम रत्न आपको सुख संपदा, समृद्धि, मान-प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति देगा। यह रत्न आपके पारिवारिक व्यवसाय के लिए भी सुखद फलदायक होगा। यह आपको लघु उद्योग व शिक्षा आदि के क्षेत्रों में भी सफलता देगा। नीलम रत्न पैतृक सम्पति की वृद्धि करेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। शनि त्रिकोण भाव के स्वामी है और लग्नेश बुध के मित्र भी है। अतः नीलम रत्न आपके लिए अनुकूल और शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न धारण करने से आपकी संतान का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। यह रत्न संतान सुख भी प्रदान कर सकता है। नीलम रत्न धारण से आपको विद्या ग्रहण या शैक्षिक क्षेत्र में शुभता प्राप्त हो सकती है। भूमि व संपति से लाभ पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते है। यह रत्न शत्रुओं पर विजय पाने में सहयोगी रत्न सिद्ध हो सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया या इसके उपरत्न धारण करने चाहिए। लहसुनिया रत्न आपको धन-धान्य से समृद्ध करेगा। आप अपने दायित्वों का निर्वाह कुशलता के साथ करेंगे। आपका उत्साह भाव देखते ही बनेगा। माता

सुख में कुछ कमी हो सकती है। रत्न प्रभाव से आप चंचल स्वभाव के हो सकते है। देश विदेश से धनार्जन योगा। पैतृक धन में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। घर भूमि भवन के विषयों से सुख की प्राप्ति होगी। लहसुनिया रत्न धारण से केतु ग्रह की शुभता बढ़ती है और अशुभता कम होती है।

केतु धनु राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु तीसरे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया धारण करने से आप बुद्धि और पराक्रम दोनों का प्रयोग कर सफलता पाने का प्रयास करेंगे। यह रत्न आपको परम प्रतापी और अत्यन्त प्रभावशाली बनाएगा। आपको सब प्रकार के सुखों से युक्त करेगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा। यह रत्न आपके भाग्योदय में सहायक बन आपको अत्यधिक धन प्राप्त करने के अवसर दे सकता है। रत्न शुभता आपके अरिष्टों का नाश करेगी। एवं यह रत्न आपको दृढ़-विवेकी, योगाभ्यासी बनाएगा और आप विद्वान और तीव्र स्मरण शक्ति के स्वामी होंगे।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ऊँ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार है- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे ल ॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु तीसरे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः पुखराज रत्न धारण करने पर आपका साहस भाव और पहल क्षमता कम हो सकती है। आपको अपनी शिक्षा का लाभ कम ही मिल पाएगा। आप अपनी योग्यता का पूरा लाभ नहीं उठा पायेंगे। भाग्य, आय का अनुकूल न होना आपमें विवेक की कमी कर सकता है। यह रत्न आपके सुख-सौभाग्य और सहोदर भ्राताओं से प्राप्त सुख में कमी कर सकता है। गुरु रत्न आपकी संकल्पशक्ति में भी कमी कर सकता है। इस रत्न से आपका धार्मिक और आध्यात्मिक पक्ष कमजोर हो सकता है। पुखराज रत्न के प्रभाव से आपके वैवाहिक जीवन में भी उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है.

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने पर सुखों का ह्रास हो सकता है। आपको माता की सेवा के अवसर कम ही मिल पाएंगे। पुखराज रत्न आपको सरकारी नौकरी में बाधाएं दे सकता है। धन-धान्य और वाहन सुख में भी यह रत्न कमी कर रहा है। गुरु रत्न पुखराज आपकी तीर्थयात्राओं को सीमित कर सकता है। आपके द्वारा माता-पिता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको इष्टमित्रों से दूर रख सकता

है। रत्न प्रभाव से आपके वायु रोग प्रभावी हो सकते है। रत्न आपके धन में कमी कर सकता है। पुखराज रत्न पहनने पर आपको पराश्रय में रहना पड़ सकता है। इस रत्न को पहनने के बाद आपको शुभ कार्यो में सम्मिलित होने के अवसर कम ही मिल पाएंगे। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी आयु में कमी हो सकती है। धन और स्वास्थ्य दोनों के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। मोती रत्न आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। सृजनात्मक कार्यो में आय प्राप्ति के प्रयास आपकी दिक्कतें बढ़ा सकते है। कला से जुड़े क्षेत्रों में भी आय प्राप्ति के प्रयास असफल हो सकते है। मोती रत्न आपको अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। इसके प्रभाव से आपकी मानसिक स्वास्थ्यता में कमी हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपके पिता का आर्थिक स्तर आंशिक रूप से कुछ कमजोर हो सकता है। पिता से मिले धन और सुख का आप लाभ नहीं उठा पाएंगे। संतान संबंधी चिंताएं बढ़ सकती है। मोती रत्न आपके व्ययों में अस्थिरता का भाव दे सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। चंद्र का रत्न मोती धारण करने पर आपको धनार्जन एवं धन संचय करने में कष्ट की स्थिति आ सकती है। मोती रत्न आपकी सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में उन्नति को बाधित कर सकता है। यह रत्न आपकी व्यापारी कुशलता में भी कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके वैवाहिक जीवन को दुःखद कर सकता है। मोती रत्न धारण से आय में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। शिक्षा और समाज से आपकी द्वेष भाव की स्थिति बन सकती है। मोती रत्न आपको प्रवास और गुप्त चिंताएं दे सकता है। जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए आपमें संकल्प शक्ति की कमी हो सकती है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल पंचम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मूंगा रत्न से शीघ्र निर्णय के कारण शेयर बाजार में सट्टे के कारण आपको हानि उठानी पड सकती है। इन कारणों से आप तनावग्रस्त और आक्रमक हो सकते है। आपकी संतान को आपके क्रोध का सामना करना पड़ सकता है। मूंगा रत्न प्रभाव आपकी पेट संबंधित परेशानियों को बढ़ा सकता है। स्वभाव की उग्रता वादि-ववाद का कारण बन सकती है। रत्न प्रभाव से शल्यचिकित्सा की स्थिति भी बन सकती है। चोट और दुर्घटनाओं से आपके स्वास्थ्य सुख में कमी की स्थिति बन सकती है। जिम और व्यायामशाला में शक्ति प्रदर्शन आपको कष्ट दे सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पति से

वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते है। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य आपको आर्थिक रूप से कमजोर कर आपके आजीविका क्षेत्र में दिक्कतें दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपके भाईयों की उन्नति बाधित हो सकती है। इस रत्न से घर सुख की कमी का अनुभव आपको जीवन भर हो सकता है। घर-परिवार से दूरी के योग बन सकते है। सूर्य रत्न माणिक्य आपकी चिंताओं को बढ़ाएगा। यह रत्न माता-पिता की सेवा से आपको वंचित कर सकता है। साथ ही माणिक्य रत्न प्रभाव से आपका माता-पिता से मनमुटाव भी हो सकता है। सोने, चांदी का व्यापार करना आपके लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है। तथा आपको आंखों से संम्बंधित परेशानियां हो सकती हैं।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते है। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्यो में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते है। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु
(23/06/2017 - 24/06/2035)

राहु की दशा में आपका पन्ना, हीरा, गोमेद व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मोती, मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(24/06/2035 - 24/06/2051)

गुरु की दशा में आपका पन्ना, हीरा, गोमेद व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, पुखराज व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(24/06/2051 - 23/06/2070)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा, नीलम व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज रत्न नेष्ट हैं और मोती, मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(23/06/2070 - 24/06/2087)

बुध की दशा में आपका पन्ना, हीरा, गोमेद व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज, मूंगा व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(24/06/2087 - 23/06/2094)

केतु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ

रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पुखराज व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और मोती व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाऐं भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पटरे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ऊँ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के ह्रदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरू ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ठ व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते है। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता हैं। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता हैं।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्टेश शनि है, पंचमेश- षष्ठेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता हैं।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता हैं, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता हैं।

चन्द्र द्वादश भाव में आपको बचपन में रोगी, कष्टों को सहने वाला, शत्रुओ की अधिकता, धन-हानि, असत्य वक्ता बना सकता है। स्वास्थ्य के पक्ष से भी चन्द्र की यह स्थिति शुभ फलदायी नहीं है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 3, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विषयी माहिती

गोचर शनि जेव्हां कुंडलीतीत चंद्राला बारावा, पहिला व दूसरा येईल, तेव्हा साडेसाती सुरु होते. कुंडलीतीत चन्द्राला गोचर शनि चौथा व आठवा आला असता, ढैय्या म्हणजे अडीचकी सुरु होते. साडेसाती चा प्रभाव साडेसात वर्ष व ढैय्या चा प्रभाव अडीच वर्षें मानला गेला आहे साडेसाती चा प्रभाव सामान्यापणे शारिरीक, मानसिक व आर्थिक त्रासाचा जातो तर काहीवेलप आश्चर्यचकित प्रगतिही या कालात होते.

सामान्यापणे मनुष्याच्या जीवनात साडेसाती तीन वेला एते– पहिल्यांदा बालपणि, दूस्रयांदा तरुणपणि व तीस्रयांदा म्हातारपणि. पहिलया साडेसाती चा प्रभाव शिक्षण व आई–वडिलावर पडतो. दुस्रया साडेसाती चा प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति व कुटुंबावर पड़तो. तिसरया साडेसाती चा प्रभाव शारिरीक आरोग्यावर पडतो.

खाली दिलेल्या कोष्टकवरुन साडेसाती चा काल व प्रत्येक अडीचकी (ढय्या) चे शुभाशुभ फलासंबंधीची माहिती समजू शकेल.

प्रथम चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
अष्टमस्थान चरण	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
अष्टमस्थान चरण	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

तृतीय चक्रः

चतुर्थस्थान चरण	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
अष्टमस्थान चरण	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढ़ेसातीचा पहला चरण	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------

शनि चा ढैया फल

ढैया चा प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थस्थान चरण	सम	पराक्रम हानि
अष्टमस्थान चरण	शुभ	दम्पति
साढ़ेसातीचा पहला चरण	सम	अल्प बचत
साढ़ेसातीचा दूसरा चरण	अशुभ	व्यय
साढ़ेसातीचा तीसरा चरण	सम	स्वास्थ्य

साढेसाती वर उपाय

शनि च्या साडेसाती दरम्यान होणार्या अशुभ प्रभावांची तीव्रता कमी होना साठी दान, पूजन व्रत, मंत्रोच्चार आदि उपाय आहेत. शनिवारी काली काम्बल, काली उड़द, काले–तिल, कालयारंगाची चर्मची चप्पल, काले कापड़, लोखंडाचे दान करावे. शनिदेवाची पूजा, दर्शन व शनिवार चा उपवास करावा उपावास च्या दिवशी फले उड़द चा खाध वस्तु, हरभरे, बेसन, काले तिल, काले मीठ या वस्तुंचेच सेवन करावे पाईजे. स्वतः किवां योग्य गुरुजीकड्न खालील शनिमंत्रचा 19000 जप करुन ध्यावा.

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि चा साडेसातीत शारीरिक, मानसिक व कौटुंबिक शान्ति आणि समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता व अंगीकृत कार्यात प्रगति होण्या साठी खालील महामृत्युंजय मंत्रचा 125000 जप स्वतः करावा किंवा योग्य पूरोहिताकड्न करवून ध्यावा.

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

किवां खालील मंत्रचा कमीत कमी 108 वेला जप करावौं.

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

साढ़ेसाती च अशुभत्व कमी करुन् शुभत्व वाढवण्या साठी 5–1/4 रत्ती वजना च नीलम रत्न पंचधातु उजव्या हाताचा मध्ल्या बोटात धारण करावे. घोडायाच्या नालेची किंवा बोटीच्या कीलची अंगठी मधल्या बोटात वापरवी.

अंगठी किंवा पेन्डन्ट शुक्ल पक्षा चा शनिवारी सायंकाली सूयदृस्ता चा अर्धातास पूवदृ धारण करावी. पुष्य, अनुराधा किंवा उतरा भाद्रपदा या नक्षत्र पैकी जे नक्षत्र शनिवारी असेल त्या दिवशी अंगठी धारण करावी. अंगठी धारण करण्या पूवदृ शुद्ध निरसे दूध व गंगाजलानें अंगठीस अभिषेक करावा. धूप–दीप लावून पूजा करावी व खालील मंत्र 108 वेला जपून अंगुठी धारण करावी.

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगठी धारण केल्या नंतर शनि च्या वस्तूंचे दान करावे या मुले शनिचा अशुभ परिणामांची तीव्रता कमी होईल व आपल्या सुख–शान्ति–समृद्धि ची वाढ़ होईल.

मांगलिक विचार

जेह्वा वर किंवा कन्या ची कुंडलीत मंगळ, लग्न चतुर्थ, सप्तम, तसेच द्वादश भाव असेल तेह्वा असे जातक मंगळ दोषी होतात.।। यथोक्तम।। लग्ने व्यये च पातले जामित्रे चाष्टमे कुजे. स्त्री भर्तुविनाशाय भर्तुः पत्नी विनाशयेत्. मांगळिक दोष लग्न पासून जास्ती प्रबल होतात, पण चंद्रमा पासून यांचा दोष कम आहे. जर शस्त्रनुसार वर अणि कन्या चा मांगळिक दोष भंग होतात तर यांचे दम्पती जीवन सुखी अणि प्रसन्नता युद्ध होणार. यांचे विपरीत बगैर दोष भंग झाले, मांगळिक वर कन्या ला जीवनां चे अनेक अनावश्यक त्रास तसेच अडचणांचे सामना होणार. अतः विवाहा पूर्वी शुद्ध कुंडली मिलान करून हा दोष उचित निवारण करून दांपत्य जीवन शुरू कराय ला पहिजे. ज्यापासून जीवनात शान्ती तसेच संपन्नता होणारी.

****

तुमचे जन्म कुंडली मधे मंगळ ची स्थिति पंचम भावात आहे पंचम भाव–संतति उच्च शिक्षा, तसेच बुद्धि चा भाव आहे, अतः मंगळ प्रभाव पासून आपण पुत्र संतति युद्ध रहणारे म्हणून तुम्हाळा जीवन साठी सुख भेंटणार. पण संतति प्राप्ति साठी काही उशीर होउ सकतात जीवनात आपण स्वतः परिश्रम आणि समज पासून उच्च शिक्षा प्राप्ति कराय साठी नेहमी प्रयत्न शील रहणारे यद्यपि या मधे कधीं–मधीं अड़चणे उत्पन्न होउ सकतात पण यांचा सामना साठी आपण सफळ रहणारे. तुमची तीव्र बुद्धि होणारी तसेच कधीं–मधीं तीव्रता चा भाव प्रदर्शित होणार, तुमची संवय कोण पण कार्य लवकर शुरू कराय ची होणारी. तसेच सरकारांचे मोठे आफीशर बरोबर चांगळे सम्बंध रहणार तसेच काही फायदे पण होणारे. पंचम भावात स्थित मंगळ ची चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव वर रहणारी या मुळे तुम्हाला उष्णता, पित्त, रक्त विकार वगेरे ची कधीं–मधीं त्रास होउ सकतात पण यांचे प्रभाव पासून तुम्हाळा विशेष किंवा एका–एकी धन लाभ चा योग आहे. सांसारिक विशेष कार्य मधे कधीं–मधीं अडचणे येउ सकतात पण यांचे सामना कराय साठी आपण सफळ होणारे, एकादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि आर्थिक उन्नति साठी शुभ रहणारी ह्या पासून जीवनात धन अर्जित करणारे तसच श्रीमंत सारख्या ख्याति प्राप्त होणारी तुमचे मिळकत चा श्रोत पण जास्ती रहणार समाजातीळ सम्मान ची वृद्धि होणारी. द्वादश भाव वर मंगळ ची दृष्टि होण्या मुळे तुमी कधीं–मधीं खर्चे जास्ती करणारे असे तुमचे शुभाशुभ कार्य मधे होणार. तसेच वाम डोण्या मधे कोणी पण चिन्ह किंवा कमजोरी पण होउ सकतात पण राजनैतिक लाभ सामान्य आणि सुखी, होणार. पंचम भावात मंगळ प्रभाव पासून आपण सुखी जीवन साठी सफळ आणि समर्थ होणारे.

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- रवि पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में रवि और शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यह्रदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकान्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पडेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोडकर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराक्रमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेक्षा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्त्ता एवं आलसी होता है।

मिथुन राशि में राहु हो तो जातक- साहसी, दीर्घायु, साधु गाने वाला, योगाभ्यासी एवं बलवान् होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

धनु राशि में केतु हो तो जातक चंचल, धूर्त एवं मिथ्यावादी होता है।

शारीरिक सौष्ठ, व्यक्तित्व आणि प्रकृति

कन्या लग्नामध्ये जन्म झाल्यामुळे आपले आरोग्य सामान्य असेल, पण स्वभावात चांचल्य असेल. आपले व्यक्तिमत्व लज्जा व शीलयुक्त असेल. त्यामुळे इतरांसमोर सादर होताना त्रास होईल पण एकदा मित्रत्व झाल्यावर मोकळ्या स्वभावाने सर्वांना प्रभावित व आकर्षित कराल. अभ्यासात रूची राहील व विभिन्न शास्त्रांचे अध्ययन करून त्याचे ज्ञान प्राप्त कराल. सद्‌गुण संपन्न असाल आणि सर्व लोक प्रभावित होतील. भाग्यशाली असाल आणि अधिकांश शुभ व महत्वाची कामे सौभाग्यानेच संपन्न होत राहतील, त्यासाठी खूपच कमी कष्ट करावे लागतील. स्त्रियांकडे जास्त आकर्षण असेल.

जीवनात मित्र कमी असतील. विचारी असाल आणि कलाकार, लेखक, वक्ता, मनोवैज्ञानिक किंवा टीकाकार आदि मध्ये यश प्राप्त करू शकता. बुद्धिमत्ता तीव्र असेल आणि गूढतम गूढ तत्वे प्राप्त करण्यात यश मिळेल. भौतिक सुख संसाधनांचे तीव्र आकर्षण असेल आणि कष्टाने ती प्राप्त करून त्याचा उपभोग घ्याल. आपल्या भावना गुप्त ठेवण्यात चतुर असाल आणि त्यामुळे पहिल्या भेटीतच तुम्हाला समजून घेण्यास लोक असमर्थ असतील. स्वतःहून पुढे होऊन एखादे कार्य करण्यास संकोच कराल त्यामुळे कधी कधी त्यातून हानी व त्रास होऊ शकतो.

राजकारणात रूची कमी असेल, पण राजकारण्यांचे सचिव किंवा सल्लागाराचे काम उत्तमरित्या करू शकाल. कारण आपली बुद्धि कठीणातील कठीण प्रश्नांचे उत्तर शोधण्यास समर्थ असेल. त्यामुळे नोकरी करण्यात आपल्याला फारशी अडचण येणार नाही. भावुकता कमी असेल आणि आपल्या सर्व कामामध्ये बुद्धि व विवेकचाच वापर कराल. त्यामुळे सर्व लोक आपल्या बुद्धि मत्तेची प्रशंसा करतील समाजामध्ये प्रतिष्ठा वाढेल. प्रेमाच्या क्षेत्रात पावित्र्य राखाल. व्यापार किंवा बॅंक आदि क्षेत्रात धनार्जन करू शकता. अशाप्रकारे आपल्या शांत स्वभाव, कष्टाळू, कार्यदक्ष, विवेकी, बुद्धिमान, गुणवान व विचारवंत या रूपांमध्ये आपला परिचय ठेवण्यात समर्थ राहाल व धनऐश्वर्य व वैभव प्राप्त कराल. यथोक्तम–

कामक्रीडा सद्‌गुणज्ञान सत्वकौशालाद्यैः संयुक्तः सुप्रसन्नः।
लग्न कन्या यस्य जन्या जघन्यां कन्यां क्षीराब्धेरवाप्नोति नित्यम्।।

– जातकाभरणम

म्हणजेच कन्या लग्नामध्ये जन्मलेला जातक कामक्रीडामध्ये निपुण, सद्‌गुणी, ज्ञानवान, कार्यकुशल, सर्वदा प्रसन्न व लक्ष्मीवान असतो.

धन, कुटुंब, डोळा आणि वाणी

आपल्या जन्मसमयी द्वितीय भावामध्ये शुक्राची तूळ राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपले कौटुंबिक जीवन सुख शांती व समृद्धियुक्त असेल आणि सर्व कुटुंब परस्पर प्रेमपूर्वक राहतील आणि एकमेकांना पूर्ण सुख व मदत करतील. वाक्चातुर्याने अनेक शुभ व महत्वाची कामे सिद्ध करण्यामध्ये सफळ व्हाल. प्रौढावस्थामध्ये काही प्रमाणात डोळ्यासंबंधी कष्ट होऊ शकतात.

धर्मावर आपल्या मनामध्ये आस्था असेल आणि वेळोवेळी धार्मिक व इतर शुभ मांगलिक कार्य संपन्न करत राहाल. त्याचबरोबर इतर उत्सवांचे आयोजन करण्यात रूची राहील. पैतृक संपत्ती प्राप्त होईल आणि अनेक प्रयत्न व कष्टाने वांछित धनऐश्वर्य व वैभव प्राप्त कराल. कुटुंबाला प्रसन्न व सुविधा देण्यासाठी नेहमी प्रयत्न करत राहाल. समाजामध्ये आदरणीय व्यक्ती असाल आणि सौभाग्याने आपले जीवन सुख व प्रसन्नपूर्वक व्यतित होईल. व्यापारातून वेळोवेळी लाभ होत राहील.

आई, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, भूमि आणि शिक्षा

आपल्या जन्मसमयी चतुर्थ भावामध्ये गुरूची धनु राशी उदित होती. याचा प्रभावामुळे आपली आई उत्तम गृहिणी असेल आणि आपल्या वडिलांचा कामात ढवळाढवळ कमी करणारी असेल. त्याचबरोबर जोपर्यंत विचारत नाही तोपर्यंत कोणताही सल्ला देणार नाही. तिची प्रवृत्ती सामंजस्याने राहण्याची असेल. स्वभावाने शांत, चतुर व योग्य स्त्री असेल. पतीसंबंधी तिचा व्यवहार नम्रतेचा असेल आणि पतीने एखादा चुकीचा निर्णय घेतला तर त्यासंबंधी योग्य सल्ला देईल. त्याचबरोबर ती एक विश्वसनीय, कर्तव्यपरायण व प्रसन्न चित्ताची स्त्री असेल आणि बुद्धि मत्तेचा भाव असेल.

आपले घर सुंदर व आकर्षक असेल. छोट्या घरात राहणे आपल्याला चांगले वाटत नाही, त्यामुळे आपल्यासाठी एखाद्या समृद्ध जागेत घर निर्माण कराल. त्याचबरोबर भरपूर मोकळ्या जागेत राहाणे आवडेल जिथे मित्र व अतिथींबरोबर मनोरंजन करू शकाल. घरामध्ये आपण अनेक प्रकारची भौतिक उपकरणांची व्यवस्था कराल आणि त्यांनी घर सजवून सुंदर व आकर्षक ठेवाल. अशाप्रकारे सुसज्जित, आधुनिक घराची अपेक्षा ठेवाल. त्याचबरोबर उत्तम वाहनादिचा लाभ होईल व त्याचा उपभोग घ्याल. पैतृक संपत्ती प्राप्त होईल आणि त्यातून वेळोवेळी लाभ होईल. उच्च शिक्षण प्राप्त कराल. विज्ञान, साहित्य किंवा गणित विषयांमध्ये विशेष रूची राहील आणि तत्संबंधी उच्च शिक्षण प्राप्त होईल. त्याचबरोबर गुप्त धन किंवा विद्या पासून सुद्धा लाभ होत राहतील.

बुद्धि, सन्तान आणि लग्न सम्बन्ध

आपल्या जन्मसमयी पंचम भावामध्ये शनिची मकर राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपण बुद्धिमान, कूटनीतिज्ञ, चतुर आणि आपले काम करण्यास दक्ष असाल. सामान्यपणे शैक्षणिक कामासाठी विशेष कष्ट घ्याल आणि उच्च शिक्षण घेण्यात यश मिळेल. वैदिक साहित्य व ज्ञानामध्येसुद्धा आपल्याला रूची असेल आणि कष्टाने त्याचे तसेच ज्योतिषसंबंधी ज्ञान प्राप्त कराल. त्याचबरोबर जुने रीतिरिवाज मानणारे असाल.

संतती असेल आणि आयुष्यभर त्यांचे पूर्ण सुख व मदत मिळत राहील. कौटुंबिक कर्तव्ये पार पाडण्यात समर्थ असाल. पत्नी व मुलांवर माया असेल, पण त्याचे प्रदर्शन करू शकणार नाहीत, त्यामुळे पत्नी किंवा मुलांमध्ये आपल्या विषयी गैरसमज निर्माण होऊ शकतो. नंतर गैरसमज दूर होऊन कौटुंबिक सौख्य वाढेल. आपल्या अंतरातील भावना प्रगट करू शकणार नाहीत तसेच भावुकतेचे प्रमाण कमी असेल. हळूहळू व कष्टाने आपले काम पूर्ण कराल. प्रेमात अपयशी व्हाल पण संततीचे पूर्ण सुख लाभेल. मुले उच्च शिक्षण प्राप्त करतील व वाहनसुख लाभेल. चांगले विचार घेऊन कधी कधी कठीण काम पूर्ण करणारे तसेच मनाचा देखील कधी कधी कठोरपणा दाखवाल.

दम्पति, विवाह आणि साझेदार

आपल्या जन्मसमयी सप्तम भावामध्ये गुरूची मीन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपली पत्नी सुंदर, बुद्धिमान व सुशिक्षित असेल. तिचे डोळे अत्यंत आकर्षक असतील. दोघांमध्ये परस्पर उत्तम सामंजस्य असल्यामुळे दाम्पत्य जीवन सुख व प्रसन्नतेने जाईल. दाम्पत्य जीवनाला सामाजिक गरज समजून स्वीकाराल. विवाहानंतर आपल्या पत्नीला पूर्ण सुख व आराम प्रदान कराल आणि तिच्या सुख दु:खाची पूर्ण काळजी घ्याल. तीसुद्धा आपली पूर्ण काळजी घेईल.

व्यापार किंवा व्यवसाय क्षेत्रामध्ये आपल्याला अत्यंत सावधपूर्वक आपल्या भागीदाराची निवड करावी लागेल. आपण एक कष्टाळू व्यक्ती आहात आणि निरंतर काम करण्याची तयारी असते. एखादे काम किंवा योजनेला अंतिम रूप देताना तुम्हाला एकांताची गरज भासत असते. आपल्या कठीण परिश्रम व पात्रतेने जीवनामध्ये प्रगतीच्या मार्गावर अग्रेसर राहाल आणि व्यापारामध्ये शिखरावर किंवा नोकरीमध्ये एखाद्या उच्च पदावर जाल. बाहेर गुंतवणूक केलेला पैसा कष्टाने परत मिळेल. त्यामुळे व्यापारापेक्षा नोकरीवरच ध्यान देणे चांगले. याचा अर्थ व्यापार करण्याची इच्छा सोडून द्यावी असा नाही. फक्त सावधपणे व सतर्कतेने कामे करावीत. आपल्यासाठी दलाली, लेखा आणि द्रव्यासंबंधी कामे किंवा सिंचन विभाग चांगला राहील. वृषभ, मकर, कर्क आणि वृश्चिक लग्नाच्या जातकाशी संबंध जोडावेत. सुखी जीवनासाठी यापैकी एखाद्या राशीचा जोडीदार निवडावा. याव्यतिरिक्त आपली पत्नी बुद्धिमान, पुत्रवान परंपरेनुसार धर्मानुपालन करणारी, विश्वसनीय व कलाकार असेल.

पिता, व्यवसाय आणि सामाजिक स्थिति

आपल्या जन्मसमयी दशम भावामध्ये बुधाची मिथुन राशी उदित होती. याच्या प्रभावामुळे आपल्या वडिलांचे आरोग्य चांगले असेल आणि आपल्या कौटुंबिक कार्यांना कष्टाने पूर्ण करण्यास तत्पर असतील. ते नेहमी घ्ढपणे आपल्या निश्चयावर ठाम असतील आणि अपेक्षित यश प्राप्त करूनच कामे पूर्ण करतील. सामान्यपणे ते निरंतर काम करणारे जिज्ञासू आणि उदार प्रवृत्तीचे असतील, पण त्यांच्या जीवनामध्ये अनेक परिवर्तने आलेली असतील.

व्यवसाय क्षेत्रामध्ये भागीदारीमध्ये विशेष लाभ होणार नाही, पण नोकरीतून उचित लाभ व संतुष्टि मिळेल. अपरिहार्यपणे भागीदारी करावीच लागली तर अतिशय सावधपणे व सतर्कतेने काम करावे. आपल्यासाठी उचित कार्य लेखा विभाग, कायदेसंबंधी कामे किंवा वकील किंवा पाण्यासंबंधित विभाग असेल. याव्यतिरिक्त शिक्षक, फिल्म वितरक, ज्योतिष किंवा तंत्र, मंत्र आणि क्षेत्रीय नेत्याच्या रूपातून सुद्धा लाभ व यश मिळू शकते. सरकारी स्रोतातून अपेक्षित मदत मिळे व सरकारकडून उचित लाभ व सन्मान प्राप्त होईल. याव्यतिरिक्त आपण कार्यदक्ष, वरिष्ठांचे आज्ञाधारक, धार्मिक किंवा पुण्यकार्य करणारे, प्रेमळ स्वभाव व प्रभावी व्यक्ती असाल आणि समाजामध्ये यथोचित मानसन्मान प्राप्त होईल.

फलादेश - 2025

यंदा गोचरीने गुरु अकराव्या भावात आहे. म्हणून हे वर्ष तुमच्चासाठी अत्यंत चांगळे व सौभाग्यकारक असेळ. ह्या काळात तुम्ही भरपूर प्रमाणात धन प्राप्त कराळ. तुमची आर्थिक स्थिती चांगळी असेळ. व्यापारात वा नोकरीत अपेक्षित सफळता मिळेळ. नोकरीत किंवा राजकारणात बढ़तीची शक्यता आहे. ज्योतिषशास्त्रावरचा तुमचा विश्वास वाढेळ, मानसिक संतुष्टि नुभवाळ. सामाजिक क्षेत्रात प्रतिष्ठा वाढेळ व कीर्ति दूरवर पसरेळ. ज्यामुळे ळोकांवर प्रभाव पडेळ. त्याचबरोबर यंदा अन्य गोचरफळ व दशाफळ पण चांगळे आहे. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ.

यंदा गोचरीने शनी अष्टम भावात असेळ. त्यामुळे सामान्यतः हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. ह्या काळात प्रकृती सामान्य असेळ. महत्वाची कार्ये उत्साहाने व पराक्रमाने सम्पन्न कराळ. पत्नीची प्रकृती ठीक राहीळ व कौटुंबिक सुख मिळेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर प्रमाणात धनप्राप्ती संभवते. ह्या काळात कुटुंबातीळ ळोकांशी, भवंडे व मित्रांशी संबंध सामानय असतीळ. त्याचबरोबर कष्टपूर्वक उन्नती संभवते. यंदा अन्य गोचर व दशा अनुकूळ असल्याने कार्यसिद्धी होईळ. मानसिक समाधान मिळेळ. पण शनीच्या दशेचा प्रभाव कमीअधिक प्रमाणात दिसेळ. जरी विशेष दुष्परिणम नसळा तरी अनुकूळते साठी शनीच पूजा व दान नियमितपणे करावे. शनिवारी डाव्या हाताच्या मधल्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी.

गोचरीने यंदा राहू सप्तमात तर केतु ळग्नाळ असेळ. त्याच्या प्रभावाने हे वर्श सामान्यतः चांगळे जाईळ. ह्या काळात शारीरिक व मानसिकदृष्टया सुदृढ़ असाळ. महत्वाची सांसारिक कार्ये ह्या काळात पूर्ण होतीळ. व कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ. यंदा पत्नीची प्रकृती मध्यम असेळ. परस्पर संबंध चांगळे असतीळ. फळतः कौटुम्बिक जीवन सुखाचे असेळ. व्यापार किंवा कार्यक्षेत्रात भागीदार किंवा सहकान्यांकडून ळाभ होण्याची शक्यता आहे. त्याचबरोबर सामाजिक प्रतिष्ठा वाढेळ. पण उपर्युक्त कार्यात उत्साह व पराक्रम दर्शवावा ळागेळ. बांधव व मित्रवर्गाकडून सहकार्य मिळेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशा पण शुभ असेळ. त्यामुळे महत्वाची कार्ये यथासमय पूर्ण होतीळ. मिळकत वाढेळ. हे वर्ष सामाान्यतः शुभ असेळ.

राहु ची महादशा मधीं शनि चा अंतर 05/06/2025 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर बुध चा अंतर प्रारंभ होणार। शनि द्वितीय भाव मधीं तुला राशि मधी स्थित आहे। पण बुध पंचम भाव मधीं मकर राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल नाय रहणार, अतः ह्या वेळी सांसारिक अडचणे उत्पन्न होणारी, आर्थिक स्थिति विशेष चांगली नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक त्रास पण होणारी. कुटुम्ब अशान्त आणि परस्पर मतभेद रहणार, ब्यापार मधे सफळता नाय भेंटणारी तसेच उन्नति मार्ग मधे अडचणे उत्पन्न होउ सकतो. नोकरी मधे पदोन्नति साठी उशीर होणार आणि अधिकारयां बरोबर मतभेद उत्पन्न होऊ सकतो. मित्र आणि सम्बन्धी विशेष सहयोग नाय प्रदान करणारे, तसेच समाजातीळ वांछित सफळता नाय भेंटणारी. शत्रु पासून

कधीं–मधीं त्रास उत्पन्न होऊ सकतो आणि स्वास्थ्य सामान्य रहणार काही तरी अनावश्यक प्रवास होणारी. अतः असे सयम वर संयम आणि धैर्य बरोबर कार्य करावे स्वास्थ्य प्रभावित होऊ सकतो आणि कोर्ट केश मधे सफळता भेंटणारी.

हा समय तुमचा साठी शुभ नाय आहे, अतः सर्व कार्य मधे अडचणे उत्पन्न होणारी. आणि सफळता साठी असमर्थ रहणारे साहित्य संगीत कळा क्षेत्र मधे चि कम होणारी. व्यापार मधे लाभ मार्ग अव द्ध होणार. पदोन्नती मधे अडचणे येणारी अधिकारयां पासून मतभेद रहणार कुटुम्ब सुख शान्ती मधे कमी आणि परस्पर मतभेद रहणार फाळतू प्रवास होणारी तसेच समाजातील सम्मान प्राप्त होणार.

फलादेश - 2026

गोचरीने गुरु यंदा बाराव्या भावात असेळ. प्रकृती मध्यम असळी तरी मानसिकदृष्टया अशांती अनुभवाळ. आर्थिक स्थिती सामान्य असेळ. खर्च वाढता असल्याने त्रास होईळ. यंदा एरवादे मंगळ कार्य घडेळ ज्यावर खर्च संभवतो. नोकरीत उन्नतीकरता कष्ट करावे ळागतीळ व कमीअधिक प्रमाणात सफळता मिळेळ. यंदा प्रवास संभवतात. त्याचबरोबर खर्च वाढल्याने आर्थिक विषमता राहीळ. पण भविष्यात लाभ संभवतो.त्याचबरोबर या काळात अन्य गोचर शुभ पण दशा मध्यम असेळ. सांसारिक कार्यात कष्टानेच ळाभ व सुखप्राप्ती होईळ. त्याचबरोबर प्रयत्नपूर्वक मिळकतीच्या साधनांमध्ये वाद होईळ. नियमितपणे गुरुची पूजा, व्रत तथा दानादि करावे.

गोचरीने शनी यंदा आठव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने प्रकृती मध्यम असेळ. दैनंदिन कार्ये उत्साहाने सम्पन्न कराळ. पत्नीचे प्रकृती यंदा प्रभावित होईळ. त्यामुळे कौटुंबिक सुखात कमतरता येईळ व संबंधात तणाव निर्माण होईळ. आर्थिकदृष्टया हा काळ सामान्य असेळ. आवश्यकतेनुसार धनप्राप्ती होईळ. संतुष्टी कमीच असेळ. कार्यक्षेत्रात परिश्रम व पराक्रमाने सफळता मिळू शकते.यंदा अन्य गोचर शुभ पण दशा अनुकूळ नसेळ. त्यामुळे अडचणींना सामोरे जावे ळागेळ. त्याचबरोबर शनीच्या दशेचा प्रभाव असेळ. त्यामुळे नियमितपणे शनीची पूजा व दान करावे. डाव्या हाताच्या मधत्या बोटात नीळम किंवा ळोखंडाची अंगठी घाळावी. ज्यामुळे अशुभ प्रभाव कमी होतीळ. शुभ प्रभाव वाढतीळ.

यंदा गोचरीने राहू सप्तमात व केतू ळग्नात असेळ. त्यामुळे हे वर्श तुमच्यासाठी मध्यम स्वरूपाचे असेळ. ह्या काळात तुमची शारीरिक व मानसिक प्रकृती मध्यम स्वरूपाची असेळ. कधीकाळी मानसिक अशांती अनुभवाळ. महत्वाची कार्ये अत्यधिक परिश्रमाने सफळ होतीळ. त्याचबरोबर कार्यक्षेत्रात अडचणी येतीळ पण त्यावर समर्थपणे मात कराळ. ह्या काळात पत्नीची प्रकृती विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्याचबरोबर परस्पर संबंध पण मध्यम असतीळ. व्यापारात किंवा कार्यक्षेत्रात भागिदान्यांकडून किंवा सहाकार्यांकडून त्रास संभवतो. त्यामुळे सतर्क असावे. आर्थिक दृष्टया ह्या काळात अत्यधिक परिश्रमानंतरच धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर खर्चही अधिक होईळ. फळतः हे वर्ष सामान्य असेळ.त्याचबरोबर अन्य गोचर शुभ व दशा मध्यम असेळ. त्यामुळे महत्वाच्या कार्यात परिश्रमाने सफळता मिळेळ. अन्य अडचणी पण उद्भवतीळ. म्हणून शुभ फळांची वृद्धी व अशुभ फळे कमी करण्यारसाठी नियमितपणे राहू–केतूची पूजा, जप, दानादि कार्य करावे.

ह्या वर्ष राहु ची महादशा मधीं बुध चा अंतर रहणार। बुध पंचम भाव मधीं मकर राशि मधीं स्थित आहात पण राहु दशम् भाव मधीं मिथुन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ नाय आहे अतः व्यवहार मधे कमी आणि महत्वपूर्ण कार्य मधे अडचणे उत्पन्न होणारी. कुटुम्ब शान्ती नाय रहणारी तसेच परस्पर मतभेद रहणार आर्थिक स्थिति शुभ नाय रहणारी तसेच कधीं–मधीं आर्थिक अडचणे उत्पन्न होणारी. व्यापार मधे लाभ नाय होणार नोकरी मधे उन्नती सम्बन्धी अडचणे उत्पन्न होणारी मोठे

अधिकारयां बरोबर चांगले सम्बन्ध नाय रहणार फाळतू प्रवास होणारी आणि शत्रु पासून अडचणे उत्पन्न होणारी अतः असे समय वर धैर्य पासून कार्य करावे.

फलादेश - 2027

यंदा गुरु गोचरीने प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमच्या मानसिक, शारीरिक व सामाजिक क्षेत्रात महत्वाचे बदळ होतीळ आणि कार्यक्षेत्रात उन्नती मिळेळ. ह्यावर्षी अविवाहितांचा विवाह योग संभवतो.धर्माविषयी तुमच्या मनात आदर निर्माण होईळ व धार्मिक कार्ये करण्यात तत्पर असाळ. आर्थिकस्थिती सुदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर धन ळाभ संभवतो. पूर्वीची अडळेळी चांगळी व महत्वाची कार्ये सिद्धी जातीळ. ह्या काळात तुम्ही स्वतःळा अनुभवी समजाळ. पण विश्रांती मिळणार नाही तर कार्य करण्यात तत्पर असाळ. त्याचबरोबर अनय गोचरफळ व दशाफळ पण शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. ह्या काळात शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव कराळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून प्रसिद्धी मिळेळ. धार्मिक कार्यांविषयी आस्था निर्माण होईळ व त्याचे प्रदर्शन कराळ. पण तुमची मानसिक स्थिती ह्या काळात विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्यामुळे महत्वाचे निर्णय घेताना त्रास होईळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर धनप्राप्ती कराळ. पण यंदा वडिळांच्या प्रकृतीकडे जास्त ळख द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असत्याने हे वर्ष चांगळे असेळ.

यंदा गोचरीने राहू षष्ठात व केतू व्ययात असेळ. त्यामुळे हे वर्ष सामान्यतः चांगळे जाईळ. ह्या काळात तुमच्या पराक्रमात वाढ़ होईळ व सर्व ळोक तुमचा प्रभाव स्वीकारतीळ. त्याचबरोबर शत्रू व विरोधकांचा समर्थपणे पराभव कराळ. यंदा एरवादी परीक्षा किंवा खटल्यामध्ये यश मिळू शकते. हे वर्ष आर्थिकदृष्टया अनुकूल असून भरपूर धनप्राप्ती संभवते. त्याचबरोबर प्रकृतीच्या दृष्टीने हे वर्ष चांगळे असेळ. ह्या काळात इच्छावृद्धीमुळे मानसिक त्रास संभवतो. पण अन्य गोचर व दशा शुभ असेळ. त्यामुळे शुभ फळे मिळतीळ.

राहु ची महादशा मधीं बुध चा अंतर 23/12/2027 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर केतु चा अंतर प्रारंभ होणार। बुध पंचम भाव मधीं मकर राशि मधी स्थित आहे। पण केतु चतुर्थ भाव मधीं धनु राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचे शुभ आणि अनुकूल आहे, अतः आपण महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होणार. व्यापार मधे लाभ होणार नोकरी मधे उन्नती होणारी आणि शुभ परिणाम प्राप्त होणार मोठे अधिकारयां पासून मधुर संवन्ध रहणार कुटुम्ब मधे परस्पर सहयोग रहणार. तुमचा महत्वपूर्ण संपर्क स्थापित होणार तसेच पूर्ण सम्मान आणि स्नेह प्राप्त होणार अतः असे समय चा सदुपयोग करावे.

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः आत्म विश्वास आणि उत्साह उत्पन्न होणार. मोठे अधिकारयां बरोबर सम्पर्क स्थापित होणार तसेच लाभ आणि सहयोग प्राप्त होणार व्यापार साठी समय अनुकूल रहणार तसेच लाभ मार्ग प्राप्त होणार. नौकरी मधे पदोन्नती होउ सकतो कुटुम्ब सुख शान्ती आणि समृद्धी रहणारी आणि परस्पर सहयोग

देणारे. मित्र सहयोग देणारे, काही तरी प्रवास पासून लाभ होणार. समाजातीळ सम्मान यश प्राप्त क न धर्म मधे चि ठेवणारे अतः समय सदुपयोग करावे.

फलादेश - 2028

यंदा गुरु गोचरीने प्रथम भावात असेळ. त्याच्या प्रभावाने तुमच्या मानसिक, शारीरिक व सामाजिक क्षेत्रात महत्वाचे बदळ होतीळ आणि कार्यक्षेत्रात उन्नती मिळेळ. ह्यावर्षी अविवाहितांचा विवाह योग संभवतो.धर्माविषयी तुमच्या मनात आदर निर्माण होईळ व धार्मिक कार्ये करण्यात तत्पर असाळ. आर्थिकस्थिती सुदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर धन ळाभ संभवतो. पूर्वीची अडळेळी चांगळी व महत्वाची कार्ये सिद्धी जातीळ. ह्या काळात तुम्ही स्वतःळा अनुभवी समजाळ. पण विश्रांती मिळणार नाही तर कार्य करण्यात तत्पर असाळ. त्याचबरोबर अनय गोचरफळ व दशाफळ पण शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष तुमच्यासाठी चांगळे व महत्वाचे असेळ.

यंदा गोचरीने शनी नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. ह्या काळात शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव कराळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून प्रसिद्धी मिळेळ. धार्मिक कार्यांविषयी आस्था निर्माण होईळ व त्याचे प्रदर्शन कराळ. पण तुमची मानसिक स्थिती ह्या काळात विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्यामुळे महत्वाचे निर्णय घेताना त्रास होईळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर धनप्राप्ती कराळ. पण यंदा वडिळांच्या प्रकृतीकडे जास्त ळख द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असत्याने हे वर्ष चांगळे असेळ.

यंदा गोचरीने राहू पंचमात व केतू अकराव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावने शुभ फळे मिळतीळ. ह्या काळात अनावश्यक चिंता व त्रासापासून मुक्ती मिळेळ. प्रेम–प्रकरणाची शक्यता आहे. त्याचबरोबर मुळांकडून सुख मिळेळ. त्यांची प्रकृती उत्तम असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष अनुकूळ असून भरपूर धनप्राप्ती संभवते. अनायासपणे धनप्राप्तीचे योग आहेत. कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ व राजकारणातीळ एरवाद्या महत्वाच्या व्यक्तीशी किंवा उच्चाधिकान्याशी संपर्क स्थापित होईळ. ज्यापासून भविष्यात ळाभ होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ.

ह्या वर्ष राहु ची महादशा मधीं केतु चा अंतर रहणार। केतु चतुर्थ भाव मधीं धनु राशि मधीं स्थित आहात पण राहु दशम् भाव मधीं मिथुन राशि मधीं स्थित आहे।

हा समय तुमचा साठी सामान्य शुभ रहणार अतः शुभ परिणाम प्राप्त होणार. परिश्रम पासून सफळता प्राप्त होणारी तसेच उन्नति प्राप्त करणारे आर्थिक स्थिति चांगली रहणारी आणि धनार्जन होणार म्हणजे मिळकत वृद्धी होणारी. नौकरी मधे पदोन्नति होउ सकतो आणि अधिकारयां बरोबर चांगला संबन्ध रहणार. कुटुम्ब सुख शान्ती चांगली रहणारी तसेच परस्पर मधुर संबन्ध रहणार. नवीन पूंजी लाभ होउ सकतो पण जोखम कार्य क नका. घरगुती समान खरेदी साठी खर्चे होणारे तसेच काही तरी फायदे ची प्रवास होणारी आणि भविष्य साठी लाभ आणि सम्मान प्राप्त होणार तसेंच कल्पना पूर्ण कराय साठी नवीन सम्पर्क स्थापित होणारे.

फलादेश - 2029

ह्यावर्षी गुरु गोचरीने तुमच्या पत्रिकेत दुसऱ्या भावात आहे. म्हणून त्याच्या शुभ प्रभावाने तुमची आर्थिक स्थिती सृदृढ़ असेळ व मिळकतीची साधने वाढून भरपूर प्रमाणात धन व ळाभ मिळवाळा. ह्या काळात कौटुम्बिक सुख–शांती असेळ व पुत्रप्राप्तीचा योग संभवतो. पण कधी–कधी खर्च वाढल्याने मन उद्वीग्न असेळ. ह्या काळात समाजात तुमची प्रतिष्ठा वाढेळ व समाजत एक प्रभाववी व्यक्ती म्हणून मानाचे स्थान मिळेळ. धार्मिक कार्यांची आवड राहीळ. त्याचबरोबर वाणीतीळ ओजस्विता वाढून ळोक तुमच्या बोळण्याकडे ळक्ष देतीळ. व्यापारात चांगळे योग जुळून येतीळ. त्याचप्रमाणे गोचरीची व दशेची अनुकूळ फळे मिळाल्याने हे वर्ष तुमच्याकरता चांगळे व भाग्याचे संभवते.

यंदा गोचरीने शनी नवव्या भावात आहे. त्यामुळे हा काळ तुमच्यासाठी चांगळा असेळ. ह्या काळात शत्रू व प्रतिस्पर्ध्यांचा पराभव कराळ व समाजात प्रतिष्ठित व्यक्ती म्हणून प्रसिद्धी मिळेळ. धार्मिक कार्यांविषयी आस्था निर्माण होईळ व त्याचे प्रदर्शन कराळ. पण तुमची मानसिक स्थिती ह्या काळात विशेष चांगळी रहाणार नाही. त्यामुळे महत्वाचे निर्णय घेताना त्रास होईळ. आर्थिकदृष्टया पण हे वर्ष चांगळे असेळ व भरपूर धनप्राप्ती कराळ. पण यंदा वडिळांच्या प्रकृतीकडे जास्त ळख द्यावे. त्याचबरोबर अन्य गोचर व दशाफळ शुभ असत्याने हे वर्ष चांगळे असेळ.

यंदा गोचरीने राहू पंचमात व केतू अकराव्या भावात असेळ. त्याच्या प्रभावने शुभ फळे मिळतीळ. ह्या काळात अनावश्यक चिंता व त्रासापासून मुक्ती मिळेळ. प्रेम–प्रकरणाची शक्यता आहे. त्याचबरोबर मुळांकडून सुख मिळेळ. त्यांची प्रकृती उत्तम असेळ. आर्थिकदृष्टया हे वर्ष अनुकूळ असून भरपूर धनप्राप्ती संभवते. अनायासपणे धनप्राप्तीचे योग आहेत. कार्यक्षेत्रात उन्नती होईळ व राजकारणातीळ एरवाद्या महत्वाच्या व्यक्तीशी किंवा उच्चाधिकान्याशी संपर्क स्थापित होईळ. ज्यापासून भविष्यात ळाभ होईळ. त्याचबरोबर अन्य गोचरफळ व दशाफळ शुभ असेळ. त्यामुळे हे वर्ष चांगळे जाईळ.

राहु ची महादशा मधीं केतु चा अंतर 10/01/2029 ला समाप्त होणार। ह्या नंतर शुक्र चा अंतर प्रारंभ होणार। केतु चतुर्थ भाव मधीं धनु राशि मधी स्थित आहे। पण शुक्र पंचम भाव मधीं मकर राशि मधी स्थित आहात।

हा समय तुमचा साठी विशेष शुभ आणि अनुकूल रहणार अतः असे समय वर धैर्य आणि उत्साह उत्पन्न होणार. कुटुम्ब शान्ती आणि परस्पर मधुर सम्बन्ध, सहयोग रहणार व्यापार, कार्य क्षेत्रातीळ फायदे होणार. नौकरी मधे उन्नति होऊ सकतो आणि मोठे अधिकारयां बरोबर मधुर सम्बन्ध स्थापित होणार. समाजातीळ यश आणि वांछित सफळता भेंटणारी तसेच साहित्य, कळा, वगेरे मधे चि उत्पन्न होणारी. शारीरिक आणि मानसिक स्थिति चांगली रहणारी काही तरी प्रवास होणारी तसेच प्रवास पासून फायदे होणार. नवीन प्रयोजने सफळ होणारी तसेच सांसारिक वस्तु खरेदी साठी खर्चे होणार पण आर्थिक स्थिति अनुकूल रहणारी अतः असा समय

सदुपयोग करावे.

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(23/06/2017 - 24/06/2035)

राहु की अन्तर्दशा 23/06/2017 को आरम्भ और 24/06/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु-दशम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि-चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। राहु की इस दशा में आपकी प्रगति, जीविका में उन्नति होगी, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा तीर्थस्थलों की यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति होगी और आप शक्तिशाली तथा सक्रिय होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुज्न्य संक्रामक रोग, रक्त संचार की समस्याएं, वातजन्य रोग, निचली भुजाओं की समस्या, चर्मरोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरत कर इनमें से अधिकांश से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। व्यापार-व्यवसाय में अच्छी कमाई होगी। सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। पिता से कुछ लाभ मिलेगा। आपका बैंक बैलैंस सन्तोषजनक रहेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, उड्डयन, वैमानिकी, कला, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, कम्प्यूटर, खाद्यान्न से संबंधित सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टीबायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ तथा भोजन से संबंधित व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को लाभ, पदोन्नति, सहकर्मियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों से सद्व्यवहार और कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से जुड़े लोगों की अच्छी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपकी जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। आपको यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और आप मानवीयता के कार्य करेंगे।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सुख आराम मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में आपको अचल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा में छोटी तथा दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर विज्ञान, वाणिज्य-व्यापार, भोजन, प्रोद्योगिकी आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है और आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं तथा मौलिकता और मानसिकता से सम्बद्ध सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे आनन्द मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, जीविकोपार्जन में प्रगति, सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपकी माता की यात्रा तथा साझेदार से लाभ मिलेगा, किन्तु, उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा। आपके पिता को लाभ, बचत तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ तथा परिवर्तन होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की यात्रा, व्यय तथा मामूली स्वास्थ्य-समस्याएं हो सकती हैं।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके जीविकोपार्जन में उन्नति तथा यात्रा होगी और आपको सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के कारण यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा। शनि की अन्तर्दशा में आपको यश ख्याति, कार्यों में सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, प्रतिद्वद्वियों पर विजय और यात्रा होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्या उत्पन्न कर सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, सफलता, सुख तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। सूर्य के कारण कुछ परिवर्तन हो सकता है जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ होगा और शादी तथा यात्रा होगी। मंगल की अन्तर्दशा में सम्पत्ति, हर प्रकार का लाभ तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

अंर्तदशा :- राहु - शनि
(30/07/2022 - 05/06/2025)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 23/06/2017 को प्रारंभ होकर 24/06/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 30/07/2022 को प्रारंभ होकर 05/06/2025 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

द्वितीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 4, 8, 11 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप खूब परिश्रम करेंगे, मगर फल उससे बहुत कम मिलेगा। आय में गिरावट आएगी। कटु वाणी के कारण समाज में बदनामी होगी। व्यर्थ इधर-उधर भटक सकते हैं। अवसर उपलब्ध होंगे, मगर उनका लाभ उठाने में असमर्थ रहेंगे।

पारिवारिक जीवन दुखमय हो सकता है। धातु, भंडारण, खनन और श्रमिकों से संबंधित कार्यों में खूब लाभ हो सकता है और सब कष्ट दूर हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं
- पीपल की जड़ में जल अर्पित करें
- भोजन की पहली रोटी गाय को दें

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(05/06/2025 - 23/12/2027)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/06/2017 को प्रारंभ होकर 24/06/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 05/06/2025 को प्रारंभ होकर 23/12/2027 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान होंगे, ज्ञानार्जन के लिए किसी पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं। बुद्धिमान होंगे; किसी वरिष्ठ व्यक्ति के सलाहकार बन सकते हैं। विषय-वासनाओं में रुचि हो सकती है जिससे शक्ति का ह्रास संभव है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(23/12/2027 - 10/01/2029)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/06/2017 को प्रारंभ होकर 24/06/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 23/12/2027 को प्रारंभ होकर 10/01/2029 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग-बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के दशम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके जीवन में असाधारण परिवर्तन आ सकते हैं, जो अशुभ हो सकते हैं। पारिवारिक जीवन में भी समस्याएं हो सकती हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए : हनुमान जी की उपासना करें, प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।

शनिवार और मंगलवार को उपवास करें। उपवास के बाद हनुमान जी की उपासना करें, मीठा भोजन ग्रहण करें। नमक का सेवन न करें।

निम्न उपाय भी लाभकारी रहेंगे :

- गरीबों को और मंदिर में कंबल बांटें
- कुत्तों को भोजन दें
- भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(10/01/2029 - 11/01/2032)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 23/06/2017 को प्रारंभ होकर 24/06/2035 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 10/01/2029 को प्रारंभ होकर 11/01/2032 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप रोमांटिक हो सकते हैं। राजनीति में दिलचस्पी हो सकती है।

लोकप्रियता बढ़ेगी, पर्याप्त मित्र होंगे। योग्यता के बल पर धन कमाएंगे। सट्टेबाजी में भी लाभ हो सकता है। सरकार से पुरस्कार मिल सकता है।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 60,000 (साठ हजार) जाप करें।